अच्युताष्टकम्

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

अच्युताष्टकम्

प्रकार	अष्टकम्
देवता	भगवान विष्णु
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	संस्कृत विकिस्रोत (sa.wikisource.org) — अच्युताष्टकम्, revision 369168
आभार	पाठ: संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

अच्युतं केशवं रामनारायणं

acyutaṃ keśavaṃ rāmanārāyaṇaṃ

कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥

kṛṣṇadāmodaraṃ vāsudevaṃ harim ||

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं

śrīdharaṃ mādhavaṃ gopikāvallabhaṃ

जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ १ ॥

jānakīnāyakaṃ rāmacandraṃ bhaje || 1 ||

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं

acyutaṃ keśavaṃ satyabhāmādhavaṃ

माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ॥

mādhavaṃ śrīdharaṃ rādhikārādhitam ||

इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं

indirāmandiraṃ cetasā sundaraṃ

देवकीनन्दनं नन्दनं संदधे ॥ २ ॥

devakīnandanaṃ nandanaṃ saṃdadhe || 2 ||

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे

viṣṇave jiṣṇave śaṅkhine cakriṇe

रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये ॥

rukmiṇīrāgiṇe jānakījānaye ||

वल्लवीवल्लभायाऽर्चितायात्मने

vallavīvallabhāyā'rcitāyātmane

कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥ ३ ॥

kaṃsavidhvaṃsine vaṃśine te namaḥ || 3 ||

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण

kṛṣṇa govinda he rāma nārāyaṇa

श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ॥

śrīpate vāsudevājita śrīnidhe ||

अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज

acyutānanta he mādhavādhokṣaja

द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४ ॥

dvārakānāyaka draupadīrakṣaka || 4 ||

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो

rākṣasakṣobhitaḥ sītayā śobhito

दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ॥

daṇḍakāraṇyabhūpuṇyatākāraṇaḥ ||

लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽ

lakṣmaṇenānvito vānaraiḥ sevito'

गस्त्यसंपूजितो राघवः पातु माम् ॥ ५ ॥

gastyasaṃpūjito rāghavaḥ pātu mām || 5 ||

धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्द्वेषिणां

dhenukāriṣṭako'niṣṭakṛddveṣiṇāṃ

केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ॥

keśihā kaṃsahṛdvaṃśikāvādakaḥ ||

पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो

pūtanākopakaḥ sūrajākhelano

बालगोपालकः पातु माम् सर्वदा ॥ ६ ॥

bālagopālakaḥ pātu mām sarvadā || 6 ||

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं

vidyududyotavatprasphuradvāsasaṃ

प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ॥

prāvṛḍambhodavatprollasadvigraham ||

वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं

vanyayā mālayā śobhitoraḥsthalaṃ

लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥ ७ ॥

lohitāṃghridvayaṃ vārijākṣaṃ bhaje || 7 ||

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमाननं

kuñcitaiḥ kuntalairbhrājamānānanaṃ

रत्नमौलिं लसत् कुण्डलं गण्डयोः ॥

ratnamauliṃ lasat kuṇḍalaṃ gaṇḍayoḥ ||

हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं

hārakeyūrakaṃ kaṅkaṇaprojjvalaṃ

किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥ ८ ॥

kiṅkiṇīmañjulaṃ śyāmalaṃ taṃ bhaje || 8 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।

acyutasyāṣṭakaṃ yaḥ paṭhediṣṭadaṃ prematāḥ pratyahaṃ pūruṣaḥ saspṛham |

वृत्ततः सुंदरं कर्तृ विश्वंभरस्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥ ९ ॥

vṛttataḥ suṃdaraṃ kartṛ viśvaṃbharastasya vaśyo harirjāyate satvaram || 9 ||

अर्थ

इन श्लोकों में अच्युत, केशव, नारायण, दामोदर, माधव आदि नामों के साथ श्रीराम (सीता, लक्ष्मण, दण्डकारण्य) और श्रीकृष्ण (बालगोपाल, वंशी, कंस व असुरों का वध) की लीलाओं का स्मरण कर रक्षा की प्रार्थना है। अन्तिम श्लोक कहता है कि प्रतिदिन प्रेम से पढ़ने वाले के वश में हरि शीघ्र हो जाते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।